International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 29-07-2022; Accepted: 13-08-2022; Published: 30-08-2022
Volume 8, Issue 4, 2022, Page No. 131-132

स्वाधीनता संग्राम में मालवा निमाड़ क्षेत्र के जनजातीय नायकों का योगदान

दिनेश महाजन
रिसर्च स्कॉलर (JRF), देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
वर्तमान में हम शुद्ध हवा में जो सांस ले रहे हैं, आजादी के वीर नायकों के बलिदान के परिणाम स्वरूप हो पाया है। भारत देश हर नागरिक के राष्ट्रीय प्रेम, समर्पण भाव और स्वाभिमान का परिचायक रहा है। इस देश के स्वतंत्रता आंदोलन में जनजाति नायकों का महत्वपूर्ण योगदान एवं गौरवशाली इतिहास रहा है। मालवा निमाड़ की संस्कृति और स्वायत्तता के लिए जितना योगदान बलिदान और संघर्ष जनजातियों का है वैसा उदाहरण विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं है। स्वाधीनता के अंकुर का प्रस्फुटन स्वतंत्र प्रिय रहने वाली जनजातियों के बीच ही अंकुरित हुआ है। मालवा–निमाड़ क्षेत्र वनों, पर्वत, पठारो से घिरा हुआ है जिसमें रहने वाली जनजातियां परिस्थिति के साथ संघर्षमय रहते हुए अपनी माटी के लिए भी निरंकुश और सत्ताधारी अंग्रेजों के विरुद्ध स्वाधीनता संघर्ष में निरंतर अपना लोहा मनवाती रही है। इसी स्वाधीनता संग्राम की चिंगारी जब मध्य भारत पहुंची तो मालवा–निमाड़ के जनजाति नायकों ने अपना मोर्चा थामा जिसमें प्रमुख रुप से टंट्या भील, भीमा नायक, खाज्या नायक, सीताराम कंवर, रघुनाथ सिंह मंडलोई, सआदत खां एवं भगीरथ सिलावट आदि ने संघर्ष का गौरवपूर्ण इतिहास रचा।

मूल शब्दः स्वाधीनता आंदोलन, मालवा–निमाड़ क्षेत्र, जनजाति नायक, टंट्या भील, भीमा नायक, भील जनजाति आदि

प्रस्तावना
अंग्रेजों की दमनकारी नीति, अन्याय, आर्थिक शोषण, सामाजिक प्रथाओं पर कुठाराघात से उपजे असंतोष ने क्रांति की ज्वाला को संपूर्ण भारत में अग्नि की भांति फैला दिया। यही ज्वाला मध्य भारत के मालवा–निमाड़ क्षेत्र को भी अपनी चपेट में ले आई और इस पृष्ठभूमि पर जनजाति नायकों की भूमिका ने तो अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए। सन् 1857 की क्रांति के समय मालवा–निमाड़ की भूमि पर क्रांतिकारियों का जाल फैला हुआ था जिसके प्रमुख केंद्र खरगोन, बड़वानी, खंडवा व उसके आसपास के क्षेत्र रहे। यहां जनजाति बाहुल्य क्षेत्र होने के साथ–साथ क्रांतिकारियों की एक ऐसी व्यवस्था थी जिसका कोई अंत न था। एक नायक के बलिदान के बाद उस क्रांति की मशाल को दूसरा नायक संभाल लेता। अंततः अपने पारंपरिक हथियारों से जनजाति सेनानायको ने अपनी ऊर्जावान शक्ति से दुश्मनों को खदेड़ने में अहम योगदान दिया।
इसी का परिणाम रहा कि आज जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों के पराक्रम उनके अमूल्य योगदान, बलिदान को सदैव संजोए रखने एवं आने वाली पीढ़ी को उनकी बहादुरी के किस्से सुनाने के लिए देश के विभिन्न हिस्सों में जनजातीय समुदाय के स्वतंत्रता सेनानियों से संबंधित संग्रहालयो का निर्माण कर रहा है।

मालवा–निमाड़ क्षेत्र के प्रमुख जनजाति स्वतंत्रता सेनानी
1. टंट्या भील– इंडियन रॉबिन हुड, मध्यप्रदेश–गुजरात की सीमा के भील जननायको में टंट्या भील, जिन्हें टंट्या मामा कहकर संकट में समुदाय द्वारा पुकारा जाता। वनों में साथियों के साथ रहकर अंग्रेजों, सेठ–साहूकारों आदि के विरूद्ध संघर्ष की गुप्त नीतियां बनाकर हवा की तीव्र गति से उन पर आक्रमण कर गुलामी के चंगुल से मुक्ति दिलाने में उनका बलिदान अमूल्य है। उनके पराक्रम के आगे अंग्रेजों के हथियार भी काम नहीं आए तभी तो उन्हें छलपूर्वक गिरफ्तार कर सन् 1886 में फांसी पर लटका दिया किंतु उनकी शौर्य गाथा आज भी नव युवकों को प्रेरणा देती है।

2. भीमा नायक– स्वाधीनता आंदोलन और जनजातीय चेतना के प्रेरणादायक के रूप में एक नायक और हुआ – भीमा नायक। मध्य प्रदेश के निमाड़ क्षेत्र के भील जनजातियों का नेतृत्व करने वाले भीमा नायक बड़वानी के पंचमोहली गांव के थे, जिन्होंने सन् 1857 के स्वतंत्रता समर में ना केवल अंग्रेजों की टुकड़ी को हिलाकर रख दिया, अपितु जनजाति समुदाय को अंग्रेजों के शोषण के विरुद्ध एक विशाल सेना के रूप में खड़ा कर दिया। भील कोर सेना जो कि अंग्रेजों ने भीमा नायक पकड़ने के लिए भेजी थी वह उनके हाथ नहीं आए किंतु सन् 1867 में उन्हें धोखे से बंदी बना लिया गया।

3. खाज्या नायक– बड़वानी (सेंधवा) के भील जनजाति के खाज्या नायक ने स्वतंत्रता संग्राम की कमान संभालते हुए अंग्रेजों की सेना पर कई धावे बोले। कई अवसरों पर पराजय के बावजूद अपनी जान की परवाह किए बिना अंग्रेजों से प्रत्यक्ष रूप से संघर्ष किया। क्रांतिकारी तात्या टोपे के साथ भी वे संपर्क में थे। सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के उपरांत भी उन्होंने अपना संघर्ष जारी रखा। अंततोगत्वा छलपूर्वक पीछे से उन पर गोली चला कर महायोद्धा के जीवन पर विराम लगा दिया गया।

4. निमाड़ के सीताराम कंवर और रघुनाथ सिंह मंडलोई– भिलाला जनजाति के नायक एवं निमाड़ क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानी सीताराम कंवर और रघुनाथ सिंह मंडलोई द्वारा आजादी की लड़ाई का मोर्चा संभाला। भीमा नायक और खाज्या नायक के बाद उन्होंने निमाड़ क्षेत्र की बागडोर संभालते हुए क्रांति को आगे बढ़ाया। सन् 1858 में बंड नामक स्थान पर अंग्रेजों से युद्ध में सीताराम कंवर अपने साथियों के साथ मारे गए। रघुनाथ सिंह मंडलोई एवं उनके साथियों के साथ मेजर कीटिंग द्वारा झूठी बातचीत का संदेश भेजकर उन्हें भी बंदी बना लिया गया।

5. वीर आदिवासी रेंगा कोरकू– अंग्रेजों और तत्कालीन होलकर और सरकार के अधिकतर इस्तेहारों और गजट में जब भी टंट्या भील का वर्णन किया गया उसमें उनके 9 और साथियों का जिक्र था जिसमें कोरकू आदिवासी समुदाय के वीर रेंगा कोरकू का नाम प्रमुखता से लिया जाता है ।

टंट्या मामा के साथ मिलकर अंग्रेजो और शोषकों के विरुद्ध लंबी लड़ाई लड़ने वाले महानायक श्री रेंगा कोरकू होशंगाबाद जिले के खंडवा तहसील अंतर्गत सोनखेड़ी गांव के निवासी थे। खंडवा के जिला बनने के बाद सोनखेड़ी गांव अब होशंगाबाद से अलग होकर खंडवा जिले के हरसूद तहसील के अंतर्गत आता है। रेंगा कोरकू लंबे समय तक टंट्या मामा के दल के प्रमुख सदस्य के रूप में (1878 से 1889) तक अपनी भागीदारी निभाते रहें। टंट्या मामा का आदिवासी कोरकू समुदाय से काफी घनिष्ठ रिश्ता रहा है । अंग्रेजों ने सन् 1908 के अपने गजट में इस बात को रेखांकित किया है, कि कोरकू टंट्या भील के भारी कृतज्ञ है। क्योंकि टंट्या भील ने गरीब कोरकू आदिवासियों की काफी मदद की, टंट्या भील की कोरकू आदिवासियों से घनिष्ठता के कारण ही अंग्रेज और होलकर सरकार अनेक लालच देकर टंट्या भील को पकड़ने की नाकाम कोशिश की, अंग्रेज और होलकर सरकार में टंट्या भील के प्रति इतना गुस्सा था, कि उन्होंने यह फरमान जारी कर दिया कि इंदौर पैनल कोर्ट 190 के अनुरूप जो कोई टंट्या भील या उनके सहयोगी को शरण देगा उसे सात वर्ष की कैद और जुर्माना होगा। जब की कोई टंट्या भील या उसके साथी को रोकने या उनके आक्रमण के दौरान गोली चलाए, घायल करें या मार ही डाले तो उसके गुनाह माफ कर दिए जाएंगे। साथ ही घोषित इनामों के अलावा रू. 10500/– भी दिए जाएंगे। आदिवासियों के बीच रहने वाले गवली और बंजारा समाज के लिए भी इनाम घोषित किया गया था। कि यदि वह भी टंट्या भील या उनके साथियों को पकड़वाने में मदद करते हैं, तो उन्हें 5000 पशुओं के चराने के लिए चारागृह इनाम में दिए जाएंगे। उस समय जगह जगह पुलिस आबादी नाम के थाने खोले गए ताकि टंट्या भील, रेंगा कोरकू और उनके साथियों पर नजर रखी जा सके। आज भी चैनपुरी पुलिस आबादी जैसी जगह मौजूद है।

रेंगा कोरकू पर रुपये 500/– का इनाम था और बाद में उसने यह भी पेशकश की गई कि यदि वह स्वयं आत्मसमर्पण करते हैं तो उसके गुनाह माफ कर दिए जाएंगे। हालांकि ऐसा कोई साक्ष्य नहीं मिलता है, कि जिस में रेंगा कोरकू ने आत्मसमर्पण किया हो और कोरकू आदिवासी समुदाय से ताल्लुक रखने वाले वीर रेंगा कोरकू सही मायने में कोरकू समाज के महान जननायक है जो पिछड़ेपन और गरीब से निकलकर स्वतंत्रता और सम्मान के लिए लंबा संघर्ष किया लेकिन दुखद बात यह है, कि रेंगा कोरकू को वह सम्मान अब तक नहीं मिल पाया जिसके वह हकदार थे। रेंगा कोरकू जैसे महान महानायकों को इस तरह भुला देना वर्तमान समाज और सरकार के कार्य प्रणाली पर काला धब्बा है। इससे पहले कि उसकी स्मृति इस पीढ़ी के जेहन से लुप्त हो, आदिवासी वीर स्वतंत्रता सेनानी रेंगा कोरकू को वह सम्मान प्रदान करना चाहिए जिससे उनकी गाथा आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन सके। इस सम्माननीय वीर योद्धा की वीरगाथा को जन–जन तक पहुंचाना है।

निष्कर्ष

ओपनिवेशिक शासन के विरुद्ध अनवरत संघर्ष एवं अपने प्राणों के बलिदान के बाद आज वर्तमान में हमारे वीर सपूत जनजातीय सेनानियों के लिए जनजातीय गौरव दिवस, आजादी अमृत महोत्सव आदि कार्यक्रमों में जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों का उल्लेख इस बात की ओर प्रेरित करता है कि आने वाली पीढ़ी सदैव उनको नमन करते हुए राष्ट्र के प्रति वहीं अलख जगाए रखेगी और भारत की इस माटी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देंगे।

संदर्भ सूची

1. सुरेश मिश्रा :– ट्राईबल रिवॉल्ट्स इन 19जी सेंचुरी इंडिया पृष्ठ क्रं. 209–210, 236, 238–239
2. भगवानदास श्रीवास्तवः– 1857 के स्वाधीनता आंदोलन में मध्य प्रदेश के आदिवासियों का योगदान, 1996, पृष्ठ क्रं. 59
3. के.एस. सिंहः– पीपल ऑफ इंडिया अवस. 3, द शेड्यूल्ड ट्राइब्स ,1994 पृष्ठ क्रं.293
4. बाबा भांडः– टंट्या भील एंड द पिजन एंड ट्राईबल मूवमेंट, पृष्ठ क्रं. 98, 99, 102
5. डॉ. बी .एन. लूणिया :– मध्य भारत में विद्रोह, पृष्ठ क्रं. 146–147
6. खुशालीलाल श्रीवास्तव :– द रिवोल्ट ऑफ 1857 इन सेंट्रल इंडिया–मालवा पृष्ठ क्रं. 236
7. सुधीर सक्सेना :– मध्यप्रदेश में आजादी की लड़ाई और आदिवासी
8- vol-xv, Indore: Monday 12th March 1888, Notification: Judicial Department, 41.
9- http://mahajanhistorian-blogspot-com/2022/07/blog-post.html
10- https://www-indianemployees-com/news/details/in-madhya-pradesh-the-tribes-first-blew-the-bugle-of-the-freedom-struggle.